सिंचाई

यदि बुआई के समय भूमि में नमी की कमी हो तो बुआई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई करें। परन्तु बुआई के समय भूमि में जमाव के लिए पर्याप्त नमी होनी चाहिए तो पहली सिंचाई बीज उगाने के बाद करनी चाहिए। बाद की सिंचाईयाँ गर्म मौसम में सप्ताह में एक बार और जब ठण्ड पड़ने लगे तो 10–12 दिनों में एक बार करते हैं। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि खेत सूखने और सख्त होने न पाये नही ंतो जड़ों का समुचित विकास नहीं हो पाता।

खुदाई

जब जड़ें पूर्ण आकार की हो जाय तो उनकी खुदाई करते हैं। सुगमतापूर्वक खुदाई के लिए खेत में हल्की सिंचाई कर दें और पत्तियों को काट दें। खुदाई खुर्पी या फावड़े से करें। इसकी खुदाई बैलों द्वारा हल चलाकर भी की जा सकती है। खुदाई करने के बाद जड़ों को पानी से अच्छी तरह धो लें। बहुत बारीक जड़ों को अलग कर लें और साफ जड़ों को बाजार भेजे।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

चूर्णी फफूँद

फसल पर चूर्णी फफूँद नामक रोग का प्रकोप होता है। इस रोग में सफेद रंग का पाउडर जगह–जगह पत्तियों पर छा जाता है।

नियंत्रण

रोकथाम के लिए लक्षण दिखाई पड़ते ही 2.5 कि.ग्रा. घुलनशील गन्धक को 600 लीटर पानी में घोल बनाकर एक हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता हो तो 10 दिनों बाद यह छिड़काव दुबारा करें।

पीलापन

गाजर में पीलापन एक विषाणु (वाइरस) रोग है जो फड़का कीड़े (सिक्स स्पोटेड लीफ हापर) द्वारा फैलता है।

नियंत्रण

इस कीड़े से फसल को बचाने के लिए मैलाथियान की 1.5 मि. ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

डॉ. विजेन्द्र सिंह

निदेशक

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान

पो.बा. नं. 01, पो. आ.– जक्खिनी (शाहँशाहपुर), वाराणसी–221 305, उत्तर प्रदेश

दूरभाष– 0542–2635236 / 237 / 247; फैक्स– 0543–229007

ई–मेलः director.iivr@icar.gov.in वेबः www.iivr.org.in

संकलन–बी.के. सिंह, बी. सिंह, पी.के. सिंह, जे.के. रंजन, सुजाय साहा, रंजीत सिंह गुर्जर, सुनील गुप्ता

प्रकाशक– निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–भा.स.अनु.सं., वाराणसी

तृतीय संस्करण– 5000 प्रतियाँ, जनवरी 2015

प्रसार पुस्तिका सं. 19 / 2015

गाजर की वैज्ञानिक खेती

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agri search with a human touch

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान

शाहँशाहपुर (जक्खिनी), वाराणसी- 221 305, उ.प्र.

गाजर की वैज्ञानिक खेती

जड़ वाली सब्जियों में गाजर एक अत्यन्त ही महत्वूपर्ण सब्जी की फसल है। इसका प्रयोग सलाद, सब्जी, हलवा, मुरब्बा और रायता के रूप में उपयोग किया जाता है। इसमें विटामिन 'ए' और शर्करा प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसके प्रयोग से भूख बढ़ता है, आँख की रोशनी बढ़ती है और गुर्दे की बीमारी में लाभप्रद है।

जलवायु

गाजर ठण्डे जलवायु की फसल है। इसके जड़ों का रंग और बढ़वार तापमान द्वारा प्रभावित होता है। इसकी बढ़वार और रंग के लिए 10–15 डिग्री से. तापमान अच्छा पाया गया है। इससे ज्यादा तापक्रम पर जड़ें छोटी और कम तापक्रम पर जड़े लम्बी व पतली बनती है।

भूमि एवम् भूमि की तैयारी

गाजर की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, लेकिन दोमट या बलुई दोमट भूमि जिसमें जीवांश की पर्याप्त मात्रा हो, तथा सिंचाई और जल निकास के उचित साधन हो तथा भूमि में किसी तरह की कड़ी परत न हो, इसकी खेती के लिये सबसे उत्तम समझी जाती है। ज्यादा सख्त और बहुत हल्की मिट्टी में जड़ों में शाखाएं फूट जाती है जिससे जड़ें खराब हो जाती है। भूमि की कई बार जुताई करके मिट्टी भुरभुरी बना लेनी चाहिए।

उन्नत किस्में

गाजर में यूरोपीय और एशियाई दो तरह की किस्में पायी जाती है। एशियाई प्रजातियों में अधिक गर्मी सहन करने की क्षमता होती है अतः इनके बीज मैदानी क्षेत्रों में बनाये जा सकते हैं इन किस्मों की बुवाई का उपयुक्त समय अगस्त से अक्टूबर का महीना है।

नैन्टस

इसकी जड़ें पतली तथा मध्यम आकार की होती है। जड़ों के ऊपर वाला भाग मोटा होता है जो अन्त में बहुत पतला पुंछ की आकृति का हो जाता है। जड़ के गूदे का रंग नारंगी और जड़ के बीच की नस भी मिलते–जुलते रंग की होती है। यह खाने में मुलायम होती हैं।

पूसा केसर

इसकी पत्तियाँ अपेक्षाकृत छोटी व जड़े हल्के लाल रंग की होती है। इस प्रजाति को लम्बे समय तक खेत में रखा जा सकता है।

पूसा मेघाली

इसकी जड़े गोलाकार, लम्बी, नीचे की तरफ ठूंठ जैसी नारंगी पीले रंग की होती है। इसकी जड़े फरवरी–मार्च में तैयार हो जाने पर मई तक चलती रहती है।

गाजर नं. 29

इस प्रजाति की जड़े बेलनाकार, लगभग 15 से.मी. लम्बी एवं नारंगी रंग की होती है इसमें जड़ों के फटने की समस्या नही होती है। जड़ों के तैयार होने के बाद देर से भी खुदाई करने पर भी जड़े खाने योग्य रहती है।

पूसा रूधिरा

गाजर की इस प्रजाति की जड़े 15–20 से.मी. लम्बी तथा गहरे लाल रंग की होती है। बुवाई के 80–85 दिन में जड़े तैयार हो जाती है।

पूसा बृष्टि

यह एक लाल जड़ वाली किस्म है। जड़े 18–20 से.मी. लम्बी होती है जो कि 85–90 दिनों में तैयार हो जाती है।

पूसा असिता

यह गहरा बैंगनी रंग की जड़ों वाली किस्म है। इनके जड़ों की लम्बाई 18–20 से.मी. होती है जो बीज बुआई के 90–110 दिनों में खुदाई योग्य तैयार हो जाती है।

खाद उर्वरक

एक हेक्टेयर खेत में लगभग 8–10 टन गोबर की सड़ी खाद बुआई के 3–4 सप्ताह पूर्व डालकर अच्छी तरह मिट्टी में मिला देनी चाहिए। बुआई के पहले अन्तिम जुताई के साथ 30 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 25 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 30 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में डालें। बुआई के लगभग 5–6 सप्ताह बाद 30 कि.ग्रा. नाइट्रोजन छिटककर (टाप ड्रेसिंग) के रूप में डालें।

बुआई का समय एवम् बीज दर

पूसा केसर तथा पूसा मेघाली किस्मों (एशियाई) की बुआई अगस्त से अक्टूबर तक तथा नैन्टेस की बुआई नवम्बर–दिसम्बर में करते हैं। एक हेक्टेयर खेत के लिए 6–8 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता पड़ती है।

बीज की बुआई एवं दूरी

बुआई के समय खेत में अच्छी नमी होनी चाहिए। इसके लिए बुआई से पूर्व खेत का पलेवा करके ओट आने पर खेत की तैयारी करते हैं। इसकी बुआई या तो छोटी–छोटी समतल क्यारियों में या 30–45 से.मी. की दूरी पर बनी मेड़ों पर करते हैं। यदि क्यारियों में बुआई करनी हो तो बीज को क्यारियों में मिट्टी में मिला देते हैं। मेड़ों पर बीज 1–2 से.मी. गहराई पर लाइन बनाकर बीज बोते हैं और मिट्टी से ढ़क देते हैं। जब बीज जम जाये तो पौधों की दूरी 6–7 से. मी. रखते हैं।

अन्तःसस्य क्रियाएँ

गाजर के पौधों की बढ़वार धीमी गति से होती है। इसलिए शुरू में खरपतवार निकालना अति आवश्यक है। यदि फसल मेड़ों पर उगाई गई है तो पौध से पौध की दूरी 6–7 से.मी. कर दें और जरूरत से ज्यादा पौधे उखाड़ दें। यदि आवश्यकता हो तो बुआई के लगभग 40–45 दिनों बाद गुड़ाई करके मेड़ों पर मिट्टी चढ़ा देवें।